# AUSTRALIAN HINDI INDIAN ASSOCIATION (AHIA)

-the Association that cares

# Sandesh सन्देश

incorporating **Seniors** Newsletter

**Established 1994: Volume 24 Issue 7 July 2023**



President: Sushma Ahluwalia Editors: Sant Bajaj/Raj Batra

Secretary : Mohinder Kumar

AHIA Seniors dancing to the to the tunes of Mrs Shobha Ji and her brother Mr Kedarnath Ji in their meeting last month.

## AHIA President's Report

Hello Every One,

I hope everyone is well and as the weather is cooling down you all are keeping warm and cosy. During the month of June'23, some of AHIA's members, visited our ex-Treasurer, Mr Vipin Dogra and had picnic with him in a local ground. It was wonderful to catch up and reminiscent old times.

At our June's Seniors meeting, Mr Kedarnath Pagaddinnimath, Facilitator with the Migrant Resource Centre (CMRC) who presented very informative session on Pedestrian Safety which was much appreciated by all. It was followed by singing session with melodious songs sung by Mrs Shobha Ji, sister of Mr Kedarnath Ji.

Every month, we have a small Mobile Library of Hindi/English books set up in the Foyer outside the Grevillea Room where books are available on loan free of cost to our members. There is a good collection of Hindi story books for children and other varied variety of topics for adults. For this we sincerely thank Mr Mrityunjay Singh ji of South Asian Hindi School, Kogarah for providing a great community service.

I look forward to welcome you at our next Senior's meeting on Saturday 8th July'23, until then please take care and stay warm.

With best wishes

Sushma Ahluwalia

President

## AHIA Secretary's Report for July 2023

Dear Members,

Hope this finds you well. It is now the peak of the wintertime. The covid cases are still occurring and the wearing of masks is now compulsory at some places such as medical centres etc. Please take care and look after yourself.
AHIA's next seniors' meeting will be held from 1 pm to 4 pm on Saturday, 8 July 2023 in the Grevillea Room at the Wentworthville Community Centre, 2 Lane Street, Wentworthville NSW 2145. The flexible agenda includes - Welcome address, good wishes for birthdays and wedding anniversaries, Sarita Ji has organised Avijit Sarkar's concert, a Bingo session, if time permits, followed by tea and refreshments

As you may know, Avijit Sarkar is a well-known musician, writer and philanthropist who has been contributing to the local area for many years. He is the Director of Natraj Academy of Performing Arts in Rosehill.

The next major AHIA function is the festival of Diwali which will be held at Grand Royale Hall at Granville from 5 pm to 11 pm on 4 November 2023. Please include it in your diary.
Could we remind the members who pay annual subscriptions to renew their respective members as it is due from 1 July unless you renewed it earlier this year?
We look forward to welcoming you at the senior's meeting on Saturday, 8 July 2022.

With best wishes

Mohinder Kumar

Secretary

**AHIA celebrates Diwali on**

**4th November, 2023**

**Join us for festive fun with a Diwali Dhamaka on Satutrday 4 November, 2023 from 6.30pm**

**"Sandesh' is AHIA's** Newsletter and is published every month .

**EDITOR**
Mr Raj Batra
Mob. 0421 138 340
rajbatra52@gmail.com
**EXECUTIVE - COMMITTEE**

***President**
Mrs. Sushma Ahluwalia
Mob: 0411967374
sushmaahluwalia2014@gmail.com
***Vice-President**
Mrs. Meeta Sharma
Mob: 0411966585
meetasharma6@gmail.com
***Secretary**
Mr Mohinder Kumar
Mob: 0438203291
mohinderz@yahoo.com.au
***Treasurer**
Mr. Chand Chadha
Mob: 0410636199
chandchadha16@hotmail.com

***Members:**
Dr. (Mrs) Sarita Sachdev
Mob: 0407870490
Mr. Vivek Bhatnagar
Mob: 0431728061
Dr. Tilak Kalra
Mob: 0413753134
Mr. Raj Batra
Mob: 0421138340
Mrs Abha Gupta
Mob: 0416570608
***Public Officer:**
Mr Kali Gupta
Mob: 0402 092 967
guptakk72@gmail.com

**AHIA's website:**
www.ahiainc.com.au

**INSIDE THIS ISSUE**

** The Cartoons/pictures are courtesy various Newspapers.
**The Content and the opinions expressed in the writings are the responsibility of the writers concerned.
** The Health information is given in good faith and readers are advised to consult their own Doctor. AHIA does not accept any responsibility whatsoever.

# मुंशी प्रेमचंद

(३१जुलाई,१८८०- ८अक्तूबर १९३६)

असली नाम धनपत राय श्रीवास्तव, नवाब राय के नाम से भी जाने जाते थे। प्रेमचंद का जन्म ३१ जुलाई १८८० को वाराणसी के निकट लमही गाँव में हुआ था। उनकी शिक्षा का आरंभ उर्दू, फारसी से हुआ और जीवन यापन का अध्यापन से। १८९८ में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक स्थानीय विद्यालय में शिक्षक नियुक्त हो गए। नौकरी के साथ ही उन्होंने पढ़ाई जारी रखी १९१० में इंटर पास किया और १९१९ में बी.ए. पास करने के बाद स्कूलों के डिप्टी सब-इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हुए।

उन्हों ने उर्दू में लिखना शुरू किया | प्रेमचंद हिन्दी और उर्दू के महानतम भारतीय लेखकों में से एक हैं। प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी और उपन्यास की एक ऐसी परंपरा का विकास किया जिस पर पूरी शती का साहित्य आगे चल सका। इसने आने वाली एक पूरी पीढ़ी को गहराई तक प्रभावित किया और साहित्य की यथार्थवादी परंपरा की नीव रखी। उनका लेखन हिन्दी साहित्य के लिए एक ऐसी विरासत है जिसके बिना हिन्दी का विकास संभव ही नहीं था।

प्रेमचंद आधुनिक हिन्दी कहानी के पितामह माने जाते हैं। उनकी पहली हिन्दी कहानी सरस्वती पत्रिका के दिसंबर अंक में १९१५ में 'सौत' नाम से प्रकाशित हुई और १९३६ में अंतिम कहानी 'कफन' नाम से।

प्रेमचंद ने हिंदी में यथार्थवाद की शुरूआत की। प्रेमचन्द उर्दू का संस्कार लेकर हिन्दी में आए थे और हिन्दी के महान लेखक बने। हिन्दी को अपना खास मुहावरा ऑर खुलापन दिया। कहानी और उपन्यास दोनो में युगान्तरकारी परिवर्तन पैदा किए।

प्रेमचंद से पहले हिंदी साहित्य राजा-रानी के किस्सों, रहस्य-रोमांच में उलझा हुआ था। प्रेमचंद ने साहित्य को सच्चाई के धरातल पर उतारा। उन्होंने जीवन और कालखंड की सच्चाई को पन्ने पर उतारा। वे सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार, जमींदारी, कर्जखोरी, गरीबी, उपनिवेशवाद पर आजीवन लिखते रहे। प्रेमचन्द की ज्यादातर रचनाएं उनकी ही गरीबी और दैन्यता की कहानी कहती है। ये भी गलत नहीं है कि वे आम भारतीय के रचनाकार थे। उनकी रचनाओं में वे नायक हुए, जिसे भारतीय समाज अछूत और घृणित समझा था. उन्होंने सरल, सहज और आम बोल-चाल की भाषा का उपयोग किया और अपने प्रगतिशील विचारों को दृढ़ता से तर्क देते हुए समाज के सामने प्रस्तुत किया। उन्होंने उस समय के समाज की जो भी समस्याएँ थीं उन सभी को चित्रित करने की शुरुआत कर दी थी। उसमें दलित भी आते हैं, नारी भी आती हैं। देशभक्ति से परिपूर्ण कथाओं का संग्रह 'सोज़े-वतन' १९०८ में प्रकाशित हुई। इसपर अँग्रेज़ी सरकार की रोक और चेतावनी के कारण उन्हें नाम बदलकर लिखना पड़ा।सोजे-वतन की सभी प्रतियां जब्त कर नष्ट कर दी गई। इस समय तक प्रेमचंद ,धनपत राय के नाम से लिखते थे। इसके बाद वे प्रेमचन्द के नाम से लिखने लगे।

प्रेमचंद नाम से उनकी पहली कहानी 'बड़े घर की बेटी' १९१० में प्रकाशित हुई। मरणोपरांत उनकी कहानियाँ मानसरोवर के कई खंडों में प्रकाशित हुई। उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द का कहना था कि साहित्यकार देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है। यह बात उनके साहित्य में उजागर हुई है। १९२१ में उन्होंने महात्मा गांधी के आह्वान पर अपनी नौकरी छोड़ दी। कुछ महीने मर्यादा पत्रिका का संपादन भार संभाला, छे साल तक माधुरी नामक पत्रिका का संपादन किया, १९३० में बनारस से अपना मासिक पत्र हंस शुरू किया और १९३२ के आरंभ में जागरण नामक एक साप्ताहिक और निकाला।

उन्होंने फिल्मों में भी कहानी-लेखक की नौकरी की थी । १९३४ में प्रदर्शित मजदूर नामक फिल्म की कथा लिखी परन्तु फिल्मी दुनिया का हवा-पानी उन्हें रास नहीं आया, इसलिए सब छोड़ कर वापस आ गए |

प्रेमचंद के कई साहित्यिक कृतियों का अंग्रेज़ी, रूसी, जर्मन सहित अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ। 'गोदान' उनकी कालजयी रचना है. 'कफन' उनकी अंतिम कहानी मानी जाती है। तैंतीस वर्षों के रचनात्मक जीवन में वे साहित्य की ऐसी विरासत सौप गए जो गुणों की दृष्टि से अमूल्य है और आकार की दृष्टि से असीमित।

उन्होंने कुल १५ उपन्यास, ३०० से कुछ अधिक कहानियाँ, ३ नाटक, १० अनुवाद, ७ बाल-पुस्तकें तथा हजारों पृष्ठों के लेख, सम्पादकीय, भाषण, भूमिका, पत्र आदि की रचना की | सत्यजित राय ने उनकी दो कहानियों पर यादगार फ़िल्में बनाईं। १९७७ में 'शतरंज के खिलाड़ी' और १९८१ में 'सद्गति'। १९७७ में मृणाल सेन ने प्रेमचंद की कहानी कफ़न पर आधारित ओका ऊरी कथा नाम से एक तेलुगू फ़िल्म बनाई जिसको सर्वश्रेष्ठ तेलुगू फ़िल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला। १९६३ में गोदान और १९६६ में गबन उपन्यास पर लोकप्रिय फ़िल्में बनीं। प्रेमचंद की स्मृति में भारतीय डाकतार विभाग की ओर से ३१ जुलाई १९८० को उनकी जन्मशती के अवसर पर ३० पैसे मूल्य का एक डाक टिकट जारी किया गया। प्रेमचंद की १२५वीं सालगिरह पर सरकार की ओर से घोषणा की गई कि वाराणसी के पास प्रेमचंद के नाम पर एक स्मारक तथा शोध एवं अध्ययन संस्थान बनाया जाएगा।

. (विकिपीडिया के लेख का संक्षिप्त रूप )

संतराम बजाज

# पतझड़

सभी ऋतुओं का अपना अपना महत्व है। ऋतु- राज बसंत को कोई कैसे भूल सकता है। अगर किसी ने स्वर्ग की कल्पना की है तो याद कीजिए बसंत को, जब धरती रंग-बिरंगे फूलों से दुल्हन की तरह सज जाती है। मानों स्वर्ग ही धरती पर उतर आया हो।

ग्रीष्म-ऋतु भी किसी से कम नहीं। चमकती धूप, जब बर्फ से ढ़के पर्वतों पर पड़ती है तो पर्वत चाँदी जैसे चमचमा उठते हैं। बर्फ पिघलने लगती है। झरने ही झरने झिलमिलाने लगते हैं। पर्वतों से कलरव करती, किलकारियाँ भरती, उछलती- कूदती नदियाँ, प्यासी धरती की प्यास बुझाती व उसे हरा-भरा बना देती हैं। तप्ती धूप से छुटकारा पाने के लिए, आँखें आकाश की ओर टकटकी लगाए वर्षा-ऋतु का इन्तज़ार करती हैं।

वर्षा ऋतु का क्या कहना। घनघोर घटाएँ, आकाश में तैरते बादल, लुक्का-छिप्पी का खेल करता सूर्य, बादलों का गर्जना और बिजली का चमकना, मन रूपी मोर को मस्त बना देता है। ऐसी ऋतु ही महाकवि कालीदास को 'मेघदूत' जैसी महान कृति लिखने की प्रेरणा दे पाई।

सर्दी से पूर्व का पतझड़ भी कोई कम सुहावना नहीं होता। कहीं कहीं हरे पेड़, कहीं अधसूखे पीले पेड़ और कहीं भूरे व लाल पत्तियों वाले पेड़- देखते ही बनते हैं। ऐसा लगता है मानों 'दीपावली' में पेड़ों पर रोशनी के रंग-बिरंगी बल्ब जला दिए हों, यानि पतझड़ भी धरती को सुन्दरता से भर देता है।

आज कल सिडनी में कुछ ऐसा ही मौसम है। चमकती धूप में इन रंग बिरंगे वाले पेड़ों को देख-देख कर मन भरता ही नहीं।

ऐसे मौसम की मौज लेने के लिए Westmead Senior Citizen के संयोजकों ने Mount Tomah Botanic Garden की पिकनिक का आयोजन कर दिया। इनके कार्यकर्ताओं की जितनी प्रशंसा की जाये उतनी ही कम है। पिकनिक की मौज मस्ती का अपना आनन्द तो था ही, साथ में देखने को मिला, पेड़ों के पत्तों का हरे से पीला और पीले से लाल होना। मधुर-मधुर शीतल हवाओं की यादें, आज भी मन को ताज़ा किए हुए है।

इन रंगीन पेड़ों को फिर से देखने की इच्छा अगर थी तो दूसरा अवसर भी साथ ही आ गया। अब Liverpool Senior Citizen के आयोजकों ने Kangaroo Valley का प्रोग्राम बना दिया। यह प्रोग्राम भी बहुत सराहने योग्य था। रास्ते में रंग-बिरंगे पेड़ अपने रंगों से मन को मोहित तो कर ही रहे थे साथ ही रंगीन पत्तियाँ धरती को रंगोली जैसा सजा रही थीं। यात्रा और भी सुन्दर हो गई जब बस घुमावदार सड़कों से गुज़रती हुई घाटियों, वादियों, झरनों, झीलों से होती हुई ऊँचे ऊँचे पर्वतों पर जा पहुँची।

(2)

हवा के झोंकों से जब पत्ते पेड़ों से टूट टूट कर हवा में दूर उड़ते जा रहे थे तो सहसा मन में कवि कबीर दास जी का यह दोहा स्मरण हो आया :-

"पत्ता टूटा डार से ले गई पवन उड़ाए।
अब के बिछुड़े कब मिले दूर पड़ेंगे जाए॥"

इन झड़ते पत्तों ने मेरे मन को सोच में डाल दिया। यह जीवन भी तो पतझड़ के समान ही है। इस जीवन रूपी गाड़ी में कितने मिले, कितने बिछुड़े। बिछुड़ने के बाद वे सब कहाँ गए कुछ भी पता नहीं, सब अनिश्चित है। बिल्कुल हवा के झोंकों से उड़ते पत्तों के समान। किसी कवि ने खूब कहा है :-

"यह जीवन है, इस जीवन का, यही है, यही है, यही है रंग रूप।
थोड़ी खुशियाँ, थोड़े ग़म हैं, यहीं है, यहीं है, यहीं हैं छाव धूप।"

इस उदासीन विचार को छोड़ते हुए और अपने को झंझोरते हुए मैंने सोचा कि यह पतझड़ तो चारों ओर सुन्दरता बिखेर रहा है। ऋतुओं की तरह मनुष्य की जीवन रूपी यात्रा भी कई अवस्थाओं में बटी हुई है। सभी अवस्थाओं को पार कर के पतझड़ की अवस्था में पहुँच गई हूँ। ईश्वर से यही प्रार्थना करती हूँ कि इस मोड़ पर मैं अपने आस पास के वातावरण को मधुर, सुन्दर, शांत व सुखद बना पाऊँ। जीवन के पतझड़ को प्रकृति के पतझड़ जैसा रंगीन, सुन्दर और सुशोभित बना पाऊँ।

शारदा शर्मा

# आत्म-सम्मान

आगरा वैसे तो ताज महल, पागलखाने और पेठे की मिठाई के लिए प्रसिद्ध है लेकिन मैं वहाँ इन के लिए नहीं गया था बल्कि रेलवे में एक नौकरी मिल गयी थी, इसलिए|

हमारे रिश्ते में मामा लगते हैं,वह एक बड़ी सरकारी नौकरी में हैं,बंगला मिला हुआ है; उनके घर में ठहरने का इंतज़ाम था बाद में अपना किराये का मकान ढूंढकर वहाँ शिफ्ट हो जाना था| मामा का एक लड़का,जिस का नाम अनूप था, क़रीब क़रीब मेरी ही उम्र का था पर वह अभी कॉलेज में पढ़ाई कर रहा था और शहर में रहने के कारण कुछ ज़्यादा घुलमिल नहीं रहा था|

मैं देहात से आया था और अभी तक कुर्ता पाजामा पहनता था और यदि साफ़ शब्दों में कहा जाए तो मैं उसकी नज़रों में एक गंवार और अनपढ़ लगता था|

मामी भी कुछ ख़ास खुश दिखाई नहीं देती थी| परंतु मेरे मामा का व्यवहार बहुत अच्छा था|

इतवार को उन्हें परिवार सहित एक न्योते पर जाना था और मामी को मुझे साथ ले जाने में कुछ आपत्ति हो रही थी| मैंने उसको मामा के साथ बात करते हुए सुन लिया था|

“वहां बड़े बड़े लोग आयेंगे और यह शहर के तौर तरीके तक से वाकिफ नहीं है और यह पूरी तरह से देहाती लगता है|”

परन्तु हैरानी इस बात की थी की अनूप मेरे हक़ में बोल रहा था| “देहाती होना कोई शर्म की बात नहीं और यदि आप को उस के कपड़ों पर आपत्ति है तो मैं उसे अपनी पेंट कमीज़ दे दूंगा,क्योंकि हम एक ही साइज़ के हैं|”

लेकिन मेरे मामा ने कहा कि हम ऐसा कुछ नहीं करेंगे जिस से संदीप,यानी मेरे आत्म-सम्मान को ठेस पहुंचे |और फिर पाजामा कुरते या धोती कुरते में क्या बुराई है| याद है महात्मा गांधी जब इंग्लेंड में बादशाह जॉर्ज V से मिलने गये थे तो,खादी की शाल और आधी धोती (लंगोट) पहन कर गये थे|”

“अब यह ऐसा भी महत्मा गांधी नहीं है|”,मामी बोली|

मुझे मामी की बातों से चोट तो पहुँची पर मैं ने ऐसा कुछ नहीं किया कि उन्हें शक हो कि मैं ने उन की बातें सुन ली हैं|

दूसरे दिन सुबह मामा ने सब को,ख़ास तौर पर मुझे सुनाने के लिए, ऊंची आवाज़ में न्योते के बारे याद दिलाते हुए कहा कि सब वक्त पर तैयार रहें|

मैं सोच रहा था कि कोई बहाना बना कर जाने से मना कर दूंगा,और दो एक दिन में किसी होटल में शिफ्ट हो जाऊंगा,कि अनूप की आवाज़ आई, “अरे, संदीप, मेरी हेल्प कर दो ना! यह पापा के कुरते में इतनी सिलवटें हैं कि मेरे से ठीक ढंग से इस्तरी नहीं हो रही| धोती तो मैं ने किसी तरह से कर ली थी|”

मैं हैरान हो उस की ओर देखने लगा कि उस ने एक बात और कह डाली जिसे सुन मेरी आँखें नम हो गईं|

“भैया, मुझे संकोच हो रहा है,पर आज की पार्टी के लिए मैं तुम्हारी वह नीले रंग वाली ‘नेहरू जैकेट’ पहन सकता हूँ क्या?”

संतराम बजाज

# The Symbol OM:

Sanskrit word 'Om' means 'all' and conveys concepts of 'Omniscience', 'Omnipresence' and 'Omnipotence'" Om is a sacred 'mantra'. It is a nature's mantras, it is considered a universal sound, the seed of all words without reference to any specific religion or God. It is believed and said according to the Big Bang theory, Om is the cosmic sound that initiated the creation of the universe (According to Nasa, very similar sound like humming). OM is also called ANAHATA NAAD, means sound produced without clash. It is usually recited before Mantra. This sacred syllable is not just one sound, it is actually three. The 'Pranava' (power) mantra comprises three syllables: 'a', 'u', 'm', indicating the continuity of past, present and future. Even the mute can produce the sound of A-U-M.

It also addresses speech ('vak'), mind ('manas') and breath ('prana') and alludes to the famous trinity of Indian cosmology, the creator (Brahma), the maintainer (Vishnu) and the destroyer (Shiva).

The Aum sound encompasses two types of sounds Articulate and Inarticulate. The articulate sound is that which can be represented by letters of the alphabet. It concerned with topics which deal with the knowledge of the head which is learned through training for example learned Sanskrit or Russian. So if somebody speaks to us in Russian and we have not learned then we cannot understand him or her.

On the other hand, the other type of sound is inarticulate or intonational which deals with the heart. If that person speaks to us in Russian then we do not understand what when he laughs then we understand that he is happy or when cries we know he is unhappy. This language is called inarticulate or a universal language which is even understood by babies. Music is another example of intonation. The sound of music has a marvelous effect, it produces practically wonderful results.

The word OM has the advantages of both articulate and inarticulate, alphabetical and intonational and has deep philosophical significance. Chanting OM has an extraordinary effect on human beings. It produces harmony, peace and bliss on one and all. Even the MUTE person can produce the sound of A-U-M

The symbol OM stands for the pure Conscious which pervades the three states of waking, dream and deep-sleep. It is the real name of the Almighty. It is the key that unlocks the Kingdom of heaven. The various other spiritual leaders have more information on this topic but I am keeping it short and sweet for the Sandesh, AHIA's Seniors Newsletter.

It is interesting to know, in our prayers when you reach the point of silence, we Hindu utter OM, in English you end the prayer with AMEN, In Arabic or Persian you say AMIN.

**HARI OM**

**Presented by: Nirinder Jalpota**

**References:** Swami Parthasarthy ji on Symbolism & Iynengar Yoga, Yoga Course Notes, Ambika Yoga Kutir, Ministry of AYUSH, Government of India

# Mobile Library

Every month, Mr Mrityunjay Singh of South Asian Hindi School, Kogarah is kind enough to bring a mobile library of Hindi/English books to our meeting for members to borrow without any charge or fee. He will be doing this in every meeting in future. AHIA thanks Mr Singh for his selfless services and generosity.

***Please bring the borrowed books for return/Renewal in the meeting**

# ज्ञान वर्धन -विचारधारा

भारत में कुल राज्य 28

किस दाल खाने से ताकत बढती है चना

भारत की सभ से सुन्दर इमारत ताज महल

भारत में कौन सा फल अधिक पैदा केला

भारत में कौन सा अन्नाज अधिक पैदा चावल

कौन सा फल एक दिन में ही पक्क जाता है चीकू

जो देश किसी का गुलाम नहीं हुआ नेपाल

वह कौन सी चीज़ है जो दिन रात चलती है घड़ी समय

कौन सा जानवर बोल नहीं सकता जिराफ़

वह कौन सी चीज़ है जिसे ईश्वर ने आगे से बनाया इंसान ने पीच्छे से बनाया बैल गाड़ी

वह मीठा फल जो बाज़ार में नहीं बिकता महनत का



किस देश में कानून सख़्ती से पालन होता है सऊदी अरेबिया

किस देश में लोग अधिक महनती हैं जापान

पृथ्वी पर कुल कितने महा सगर हैं पांच

किस देश में एक भी न्यूज़ चैनल नहीं ग्रीक में

किस पेड़ की लकड़ी सोने से भी महंगी लाल चंदन की

किस पक्षी के पंख नहीं होते कीवी पक्षी

किस फल में सभ विटामिन होते हैं पपीता

रोशन लाल

## Happy Birthday

| | |
|---|---|
| Ramachandran Nagainellur | Saurabh Kaushik |
| Lalitha Shetty | Chandrakant Modi |
| Chander Kanta Chopra | Prem Bhargava |
| Rattan Shah Singh | Vimla Sharma |
| Ashok Bhalla | Ajaib Sidhu |
| Braham Sharma | Madan Mohan Dutta |
| Satya Bhardwaj | Arjun Chadha |
| Susan Sharma | Suman Bhargava |
| Sushma Garg | Neetu Gulani |
| Chandra Matani | Asha Rani Jalpota |
| Asha Rani Kumar | Asha Sanghi |
| Gurdeep Kaur Sekhon | Prem Chand Gupta |
| Suman Bhargava | Sanjay Sharma |

## Happy Anniversary

Mr.Sandeep Bansal & Mrs.Neeti Gupta

Mr.Surjit Joshi & Mrs.Sita Devgan Kumar

Mr. & Mrs. Vijay & Neena Badhwar

Mr. & Mrs. Sohan & Harjit Kaur Grewal

Mr. & Mrs. Anita & Vipan Khosla

Mr. & Mrs. Ravi & Shakuntla Gupta

Mr. & Mrs. Rekha & Sadanand Malik

***AUGUST Meeting:***

***Seniors Meetings at 2 Lane Street.***

***Wentworthville Augaut 12, 2023***

***from 1 to 4 PM***

# *मेरे जज़्बात, मेरी पत्नी के नाम*

## *तुम्हारे साथ रहकर*

*तुम्हारे पास रहकर,*
*अक्सर मुझे ऐसा लगा है, कि जैसे ..
ज़िन्दगी की राहें इतनी मुश्किल भी नहीं....
जितना लोग बताते हैं ।।
समस्याएँ उतनी भी नहीं, जितना लोग गिनाते हैं ।।
*तुम्हारे पास रहकर,*

*उस वक़्त न जाने क्यूँ तेरी,*
*तस्वीर से बातें करता हूँ* ।।

*जब आँख न पलभर सोती है,*
*जब दिल में धकधक होती है,*
*सांसें सीने में चलती हैं,*
*पर चलते चलते रोती है।।*

*जब घुटन बहुत बढ़ जाती है,*
*जब जीता हूँ न मरता हूँ*,
**उस वक़्त न जाने क्यूँ तेरी,*
*तस्वीर से बातें करता हूँ* ।।

*खिड़की में एक कबूतर को,*
*जब प्यार जताते पाता हूँ*
*तब मैं भी तुझसे मिलने को*,
*कुछ सपनों में खो जाता हूँ*

*जब सपने रोज़ बिखरते हैं,*
*जब मैं भी रोज़ बिखरता हूँ,*
*उस वक़्त न जाने क्यूँ तेरी,*
*तस्वीर से बातें करता हूँ* ।।

*दिन तो यूँ भी कट जाता है,*
*पर रातें बहुत सताती हैं ।*
*जो बातें हम तुम करते थे*,
*वे बातें बहुत रुलाती हैं ।।*

*अपने ही साये से जानम,*
*जब तन्हाई में डरता हूँ*,
*उस वक़्त न जाने क्यूँ तेरी*,
*तस्वीर से बातें करता हूँ* ।।

*क्या कुछ अपराध हुआ हमसे,*
*इतना तो हमें बता देते ।।*
*जाने से पहले, या जाकर,*
*उस घर का हमें पता देते, ।।*

*अब सूद, सभी उन भूलों का,*
*अपने अश्कों से भरता हूँ* ।
*हर वक़्त न जाने क्यूँ तेरी,*
*तस्वीर से बातें करता हूँ ।।*

*दिन....दिल में आग लगाता है,*
*रातें कितना झुलसाती हैं* ।।
*कितनी यादें, तन्हाई मे,*
*बहलाती हैं, तड़पाती हैं ।।*

*आँखें भी रोज़ बरसती हैं,*
*और मैं भी रोज़ बरसता हूँ *
*हर वक़्त, न जाने, क्यूँ तेरी*,
*तस्वीर से बातें करता हूँ ।।*

*तेरी यादों की बारिश में,*
*अश्कों से रोज़ संवरता हूँ*
*हर पल मैं जीता हूँ जानम*,
*हर पल मैं जानम मरता हूँ ।।*

*हर वक़्त न जाने क्यूँ तेरी,*
*तस्वीर से बातें करता हूँ ।।*
*हर वक़्त न जाने क्यूँ तेरी,*
*तस्वीर से बातें करता हूँ ।।*

डॉ सुमन अग्रवाल

# Growing from Seed vs. Seedlings

**The difference between seeds and seedlings**

Seedlings and seeds are different stages of plant growth. A seed is a fertilized grain with a seed coat and an embryonic plant inside. A seedling is a young plant that has sprouted from a seed. The time it takes for a seed to grow into a mature plant varies depending on the species.

All seedlings begin their lives as seeds. But the critical difference in deciding whether to purchase seeds or seedlings is how long it'll take them to grow into a mature plant.

It all comes down to timing.

**Do you have enough time to grow your plants from seed?**

Some plants need to be started as transplants if you have a short growing season.

Tomatoes are the perfect

example.

You could buy tomato seedlings at a local nursery or start your own indoors.

But most gardeners won't be able to start these from seed outdoors and expect to harvest any tomatoes.

Most of us need to start tomato seeds indoors 6-8 weeks before our last frost to get any tomatoes.

**And some plants prefer to be direct-sown.**

They want you to plant their seeds directly into your garden soil rather than transplant them as seedlings.

**To plant seedlings, you must first have seedlings.**

You can either grow your own or buy them.

If you want to grow your own, you'll need to start them from seed indoors.

**Pros and cons of starting plants from seed**

Why start plants from seed?

Starting plants from seed can be rewarding, a test of your gardening abilities, and addictive.

Planting seeds is the best way to start a garden without breaking the bank. It's also the perfect way to learn about the growing cycle of plants.

You can start seeds indoors or direct sow them.

No matter which way you plant them, there are pros and cons to growing from seed.

Seeds are cheap and easy to plant outside.

**What are the benefits of growing plants from seed?**

Cost savings. Seeds are the least expensive way to plant your garden.

Even an expensive packet of seed is usually cheaper than the cost of a single plant. So, it's easy to grow multiples of the same plant – sometimes WAY too many!

And most seeds will last for years, though over time, seeds become less viable.

And if you grow open-pollinated varieties, you can save the seeds and regrow them every year – which means even more money saved! There are **many** varieties of plants, but nurseries only grow a few of them.

When you start seeds, you're not limited to the types that happen to be popular and easy for nurseries to sell.

You can choose to grow that great-tasting heirloom tomato instead of the usual varieties you'll find at your local nursery.

When you grow plants from seed, you control how many you grow.

Who needs a 4- or 6-pack of zucchini!?

Most gardeners would agree that two zucchini plants are at least one too many in any vegetable garden.

Growing some of your own food gives you the **freedom** to depend less on others for what you need. When you raise plants grown from seed, you're taking that independence to the next level!

*Compiled by राज बत्रा*

*Copyright@SimplySmaertGardening*

**Membership Renewal**

Please renew your membership at the Seniors meeting

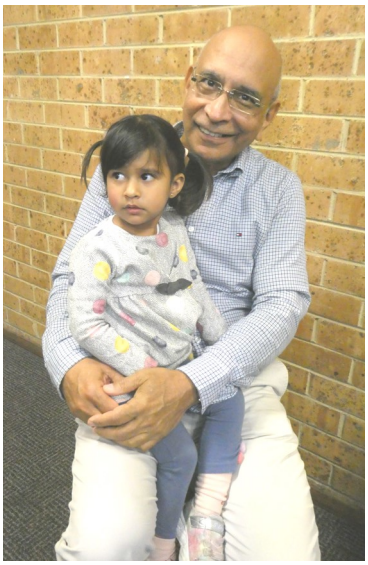

Photos by

Tilak Kalra

and

Raj Batra